Sixteenth Loksabha

an>

Title: Minister of State in the Ministry of Skill Development and Enterprerneurship made personal explanation regarding certain remarks made by him. He also tendered aplogy for the same.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE (GULBARGA): Madam, there is an important issue. … (*Interruptions*) Madam, if you do not listen then I have to come to that side.… (*Interruptions*) There is no other way. You can punish me.… (*Interruptions*) It is very important.… (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: What is it?

… (*Interruptions*)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Madam, since yesterday, we are facing it. … (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : मैं उन्हीं को ढूंढ़ रही हूं। आपकी ही व्यवस्था कर रही हूं।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं इधर देख रही थी, लेकिन he is there.

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : वे आए नहीं। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं आपके लिए हूं।

…(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे: वे वहीं थे, कैसे नहीं आए। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : क्या मैं किसी का हाथ पकड़ कर लाऊं ?

…(व्यवधान)

कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अनंतकुमार हेगड़े): अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से स्पऐट करना चाहता हूं कि इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि संविधान, संसद और बाबासाहेब अम्बेडकर के प्रति मेरी निऐठा कम नहीं है। मेरे लिए संविधान और संसद सर्वोपरि है। इसमें प्रश्न चिह्न लगाने की कोई जरूरत नहीं है। एक नागरिक के नाते मैं संविधान के खिलाफ कभी नहीं जा सकता। मैं बस इतनी ही सफाई दे सकता हूं। ...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: What is this?

… (*Interruptions*)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : अध्यक्ष महोदया, यह जो बोल रहे हैं ...(व्यवधान) इन्होंने अपनी बात को खुद ही कम करके बोला है। इन्होंने यह कहा है, अम्बेडकर की विचारधारा पर यह संविधान बना हुआ है। मनुस्मृति को चेंज करना है ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : उन्होंने बाबासाहेब के लिए बोला है।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप सब बैठिये।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप मेरी बात सुनिये।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अनंत जी।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने कहा, बात सही कही कि बाबासाहेब अम्बेडर या किसी के प्रति आपके मन में कोई निरादर हो नहीं सकता। सबके प्रति आपके मन में आदर ही है। लेकिन जीवन में कभी-कभी ऐसा होता है।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप मेरी बात तो सुनिए। क्या मैं कुछ न बोलूं?

…(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे: नहीं, नहीं, आप बोलिए। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं आपकी ऐगोनी समझ रही हूं। कभी-कभी जीवन में ऐसा होता है कि आपको अपनी बात ठीक भी लगे, लेकिन सामने वाला हर्ट होता है। ऐसा होता है। आपके मन में किसी को हर्ट करने की इच्छा नहीं होती है और आपने किया भी न हो। लेकिन मैं हमेशा बोलती हूं कि माफी मांगने से कोई छोटा नहीं होता है। आप इतना तो कह ही सकते हैं कि अगर किसी को हर्ट हुआ है, तो क्षमा मांगता हूं। यह सदन है और सदन सर्वोपरि है। हम सब मिल जुलकर सदन को चलाते हैं।

श्री अनंतकुमार हेगड़े : अगर इस बात से, जो गुमराह करके यहां पेश कर दी गई है। ...(व्यवधान) मैंने कभी ऐसा नहीं कहा था। अगर उसमें किसी को चोट पहुंची हो, तो माननीय सदस्यों के सामने क्षमा मांगने में मुझे कोई एतराज नहीं है।

HON. SPEAKER: Now, it is okay.

… (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : अब प्रश्न काल आरंभ करते हैं।

-